

धर्माचे मूलभूत विवेचन

४

विषयसूची

| | |
|--|----|
| १. ग्रंथाच्या संकलकांचा परिचय | ५ |
| २. आध्यात्मिक परिभाषेतील वैशिष्ट्यपूर्ण प्रस्तावना ! | ७ |
| ३. वेद लिहिणाऱ्या ऋषींनी स्वतःला 'द्रष्टे' म्हणणे आणि त्याचप्रमाणे प.पू. डॉक्टरांनी ग्रंथांवर 'लेखक' असे न लिहिता 'संकलक' असे लिहिणे ! | १० |
| ४. 'अध्यात्मशास्त्र' या ग्रंथमालिकेचे सामाईक मनोगत | ११ |
| ५. मनोगत | ३६ |

ग्रंथाची अनुक्रमणिका

| | |
|--|----|
| १. व्युत्पत्ती, व्याख्या आणि अर्थ | ३८ |
| २. समानार्थी शब्द (हिंदू धर्म, आर्य धर्म इ.) | ४१ |
| ३. निर्मिती | ५० |
| ४. धर्म आणि धर्मी (ईश्वर) | ५० |
| ५. धर्माचे महत्त्व | ५१ |
| ६. धर्माचे रहस्य | ५५ |
| ७. धर्मसिद्धान्त | ५६ |
| ८. धर्मलक्षण | ६६ |
| ९. धर्मप्रमाण (शास्त्रप्रमाण) | ६७ |
| १०. धर्माचे प्रकार (नीतीधर्म, वर्णधर्म, जातीधर्म, स्त्रीधर्म इ.) | ७२ |
| ५ 'धर्म'विषयीचे सखोल ज्ञान | ८१ |
| ५ संकलकांचा वैज्ञानिक दृष्टीकोन | ८४ |

विषयसूचीतील क्रमांक ४

‘अध्यात्मशास्त्र’ या ग्रंथमालिकेचे सामाईक मनोगत

अनुक्रमणिका

| | |
|---|----|
| १. अध्यात्मशास्त्र म्हणजे काय ? | १३ |
| २. आम्ही अध्यात्माकडे वळण्याचे कारण | १३ |
| ३. आम्ही अध्यात्माच्या अभ्यासाकडे वळण्याची कारणे | १३ |
| ४. ‘अध्यात्मशास्त्र’ संकलित करण्याचे उद्देश | १४ |
| ४ अ. आमची साधना | १४ |
| ४ आ. ‘स्वतःला समजलेले इतरांना सांगावेसे वाटणे’ हा मानवी स्वभाव | १५ |
| ४ इ. ‘भावार्थ किंवा शास्त्र कसे समजून घ्यावे’ हे शिकविणे | १५ |
| ४ ई. इतरांनी अयोग्य साधनेत वेळ वाया घालवू नये | १५ |
| ४ उ. योग्य साधनेची निवड करणे सुलभ जावे | १६ |
| ४ ऊ. जिज्ञासू अभ्यासकांना मार्गदर्शन व्हावे | १६ |
| ४ ए. अध्यात्माच्या सर्व अंगांची ओळख व्हावी | १७ |
| ४ ऐ. साधकाच्या प्रकृतीप्रमाणे त्याला त्या त्या साधनामार्गाची शिकवण देता यावी | १७ |
| ४ ओ. कानांपेक्षा डोळ्यांवर विश्वास | १८ |
| ४ औ. प्रवचनांच्या माध्यमातून अध्यात्मज्ञान संपूर्ण जगात पोहोचविण्याला मर्यादा | १८ |
| ४ अं. समाजघटकांतील दुरावा नाहीसा व्हावा | १८ |
| ४ क. समाजाची धार्मिक सूज उतरवणे | १९ |

| | |
|---|----|
| ४ ख. रुग्णाईत (आजारी) समाजपुरुषाला सुधारणे | १९ |
| ५. कोणासाठी लिखाण संकलित केले आहे ? | २० |
| ६. 'अध्यात्मशास्त्र' ग्रंथाचा इतिहास | २१ |
| ७. ग्रंथाची वैशिष्ट्ये | २२ |
| ७ अ. शास्त्रीय भाषा | २२ |
| ७ आ. लिखाणातील सूत्रांना (मुद्यांना) दिलेले मथळे | २५ |
| ७ इ. संतांनी सांगितलेले अध्यात्मज्ञान | २४ |
| ७ ई. साधकांना ईश्वरी कृपेमुळे मिळणारे पृथ्वीवर कोठेही उपलब्ध नसलेले असे दिव्य ज्ञान ! | २५ |
| ७ उ. सनातनचे ग्रंथ म्हणजे चैतन्याचा स्रोतच ! | २६ |
| ७ ऊ. धर्मविरोधकांनी हिंदु धर्मावर केलेल्या टीकांचे खंडण | २९ |
| ८. सनातनचे ग्रंथ : भावी 'अध्यात्म विश्वविद्यालया'चा पाया ! | २९ |
| ८ अ. सनातनच्या अध्यात्मशास्त्रविषयक ग्रंथांचे प्रकार | २९ |
| ९. लेखक नव्हे; संकलक ! | ३० |
| १०. 'अध्यात्मशास्त्र' ग्रंथाविषयी सर्वसाधारण विवेचन | ३० |
| ११. ऋणनिर्देश | ३२ |
| १२. फलप्राप्ती | ३२ |
| १३. अर्पण | ३३ |

टीपा १. ग्रंथातील काही सूत्रांच्या शेवटी मराठी किंवा इंग्रजी संकेतांक केवळ कार्यालयीन सोयीसाठी दिले आहेत.

२. या ग्रंथात अन्य संदर्भग्रंथ, तसेच लिखाण यांतून काही विषय (मुद्दे) घेतले आहेत. अशा विषयांच्या अंती लहान अक्षरांत कंसात संदर्भक्रमांक घातले आहेत. त्याचे विवरण ग्रंथाच्या शेवटी 'संदर्भसूची'मध्ये दिले आहे.